अध्याय 10: तरुण के स्वप्न

विषय-सूची 11 प्रश्नावली · 26 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1	मेरी समझ से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 10.2	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.3	पंक्तियों पर चर्चा	3 प्रश्न
प्रश्नावली 10.4	सोच-विचार के लिए	4 प्रश्न
प्रश्नावली 10.5	अनुमान और कल्पना से	5 प्रश्न
प्रश्नावली 10.6	शीर्षक	3 प्रश्न
प्रश्नावली 10.7	भाषा की बात	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.8	विपरीतार्थक शब्द और उनके प्रयोग	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.9	मिलान कीजिए — स्वतंत्रता सेनानी	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.10	स्त्री सशक्तीकरण	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.11	नारों का मिलान — स्वतंत्रता सेनानी	1 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

"उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं।" इस कथन में रेखांकित शब्द 'हम' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? (क) सुभाषचंद्र बोस के लिए (ख) देश के तरुण वर्ग के लिए (ग) चित्तरंजन दास के लिए (घ) भारतवासियों के लिए

हल

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने यह भाषण मेदिनीपुर जिला युवक-सम्मेलन में 29 दिसंबर, 1929 को युवाओं को संबोधित करते हुए दिया था।
उन्होंने देशबंधु चित्तरंजन दास के स्वप्न का उल्लेख करते हुए कहा कि उन स्वप्नों के उत्तराधिकारी आज हम—अर्थात् देश के युवा—हैं।
भाषण का सारा संबोधन युवा वर्ग को है, इसलिए 'हम' शब्द देश के तरुण वर्ग के लिए प्रयुक्त हुआ है।
अतः सही उत्तर है: (ख) देश के तरुण वर्ग के लिए।

उत्तर: (ख) देश के तरुण वर्ग के लिए

प्रश्न 2

स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न साकार होगा? (क) आर्थिक असमानता से (ख) स्त्री-पुरुष के भिन्न अधिकारों से (ग) श्रम और कर्म की मर्यादा से (घ) जातिभेद से

हल

सुभाषचंद्र बोस ने अपने स्वप्न के स्वाधीन संपन्न राष्ट्र की विशेषताएँ बताई हैं।
उन्होंने कहा कि उस राष्ट्र में जातिभेद का स्थान नहीं होगा, आर्थिक विषमता नहीं होगी, नारी-पुरुष को समान अधिकार होंगे।
परंतु उन्होंने स्पष्ट कहा—"जिस समाज में श्रम और कर्म की पूरी मर्यादा होगी और आलसी तथा अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा"—वही राष्ट्र स्वाधीन होगा।
श्रम और कर्म की मर्यादा ही वह सकारात्मक आधार है जिससे स्वप्न साकार होगा।
अतः सही उत्तर है: (ग) श्रम और कर्म की मर्यादा से।

उत्तर: (ग) श्रम और कर्म की मर्यादा से

प्रश्न 3

"उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं।" 'उत्तराधिकारी' होने से क्या अभिप्राय है? (क) हमें उनके स्वप्नों को संजोकर रखना है (ख) हमें भी उनकी तरह स्वप्न देखने का अधिकार है (ग) उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है (घ) उनके स्वप्नों पर चर्चा करने का दायित्व हमारा ही है

हल

उत्तराधिकारी वह होता है जो किसी की विरासत—सपने, जिम्मेदारी—को आगे बढ़ाने का दायित्व लेता है।
सुभाषचंद्र बोस ने कहा—"इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं।"
वे युवाओं को यह स्वप्न उपहारस्वरूप दे रहे हैं और उनसे कर्म करने की अपेक्षा कर रहे हैं।
उत्तराधिकारी होने का अर्थ है—उनके स्वप्नों को साकार करने के लिए स्वयं कर्म करना।
अतः सही उत्तर है: (ग) उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है।

उत्तर: (ग) उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है

प्रश्न 4

जब प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा और उन्नति का समान अवसर प्राप्त होगा तब— (क) राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी (ख) तरुणों का साहस बढ़ेगा (ग) राष्ट्र स्वाधीन बनेगा (घ) राष्ट्र स्वप्नदर्शी होगा

हल

सुभाषचंद्र बोस ने कहा—"उस समाज में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा और उन्नति का समान सुअवसर पाए।"
जब सभी को समान शिक्षा और अवसर मिलेगा, तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता और श्रम का पूरा उपयोग करेगा।
इससे राष्ट्र की सामूहिक श्रम-शक्ति बढ़ेगी, जो राष्ट्र निर्माण का आधार है।
अतः सही उत्तर है: (क) राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी।

उत्तर: (क) राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी

प्रश्नावली 10.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 में पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उन पंक्तियों से संबंधित भाव-विचार दिए गए हैं। स्तंभ 1 की पंक्तियों का स्तंभ 2 के भाव-विचार से सही मिलान कीजिए। स्तंभ 1: 1. "इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं।" 2. "जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा, स्वोपरि वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा।" 3. "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं।" स्तंभ 2: 1. समाज में सभी व्यक्तियों को सभी तरह की स्वतंत्रता हो और उस पर किसी तरह का बंधन या सामाजिक दबाव न हो। 2. हमारी समूची दिनचर्या और आचार-विचार इसी लक्ष्य (स्वप्न) की प्राप्ति पर केंद्रित हैं। 3. जिस देश की योजनाएँ हमारे अपने समाज को ध्यान में रखकर बनाई जाएँगी, उस देश में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं होगा।

हल

स्तंभ 1, पंक्ति 1 — "इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं..." → स्तंभ 2, भाव 2: हमारी समूची दिनचर्या और आचार-विचार इसी लक्ष्य (स्वप्न) की प्राप्ति पर केंद्रित हैं।

व्याख्या: जब हर कार्य — उठना, बैठना, लिखना, बोलना — एक ही स्वप्न की प्रेरणा से हो, तो समूची दिनचर्या उसी लक्ष्य पर केंद्रित है।

स्तंभ 1, पंक्ति 2 — "जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा..." → स्तंभ 2, भाव 3: जिस देश की योजनाएँ हमारे अपने समाज को ध्यान में रखकर बनाई जाएँगी, उस देश में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं होगा।

व्याख्या: स्वदेशी समाज के हित में काम करने वाला राष्ट्र ही भारतवासियों का अभाव मिटा सकता है।

स्तंभ 1, पंक्ति 3 — "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं।" → स्तंभ 2, भाव 1: समाज में सभी व्यक्तियों को सभी तरह की स्वतंत्रता हो और उस पर किसी तरह का बंधन या सामाजिक दबाव न हो।

व्याख्या: 'सब दृष्टियों से मुक्त' और 'समाज के दबाव से वह मरे नहीं' — दोनों ही पूर्ण सामाजिक स्वतंत्रता की बात करते हैं।

उत्तर: पंक्ति 1 → भाव 2; पंक्ति 2 → भाव 3; पंक्ति 3 → भाव 1

प्रश्नावली 10.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

"उस समाज में अर्थ की विषमता न हो।" — इस पंक्ति का क्या अर्थ आपकी समझ में आया?

हल

'अर्थ की विषमता' का अर्थ है आर्थिक असमानता — समाज में कुछ लोगों का अत्यंत धनी होना और कुछ का अत्यंत गरीब होना।
नेताजी ने अपने स्वप्न के समाज में यह असमानता नहीं चाही।
उनका विचार था कि जब तक कुछ लोगों के पास अधिक धन और अधिकार हैं और कुछ के पास कुछ भी नहीं, तब तक समाज स्वस्थ नहीं हो सकता।
एक आदर्श समाज वह है जिसमें सभी को जीवन की मूलभूत सुविधाएँ समान रूप से मिलें और कोई भूखा-नंगा न रहे।

उत्तर: इस समाज में धन-संपत्ति की असमानता नहीं होनी चाहिए — न कोई अत्यंत धनी हो और न कोई अत्यंत निर्धन।

प्रश्न 2

"वही स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना और उनके आनंद का निर्झर रहा।" — इस पंक्ति का क्या अर्थ आपकी समझ में आया?

हल

इस पंक्ति में 'स्वप्न' से तात्पर्य देशबंधु चित्तरंजन दास के स्वाधीन-संपन्न भारत के स्वप्न से है।
'उत्स' का अर्थ है स्रोत अथवा उद्गम; 'निर्झर' का अर्थ है झरना — जो निरंतर बहता रहे।
अर्थात् वह स्वप्न ही उनकी सारी शक्ति का स्रोत था — जब-जब कठिनाई आई, इसी स्वप्न से उन्हें ऊर्जा मिली।
और वही स्वप्न उनके जीवन में आनंद का अखंड झरना बनकर बहता रहा — अर्थात् इस स्वप्न को देखना, इसके लिए काम करना उन्हें निरंतर आनंद देता था।

उत्तर: चित्तरंजन दास का यह स्वप्न ही उनकी शक्ति का स्रोत और जीवन के आनंद का अखंड झरना था।

प्रश्न 3

"उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो।" — इस पंक्ति का क्या अर्थ आपकी समझ में आया?

हल

'सब दृष्टियों से मुक्त' का अर्थ है — हर प्रकार की बंधन-मुक्ति।
नेताजी का आशय था कि व्यक्ति को जाति-भेद, आर्थिक असमानता, सामाजिक दबाव, विदेशी शासन — सभी से मुक्ति मिले।
न शासन का दबाव हो, न समाज का भय, न भूख का कष्ट, न अशिक्षा का अंधेरा।
ऐसा समाज जिसमें व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता से अपना जीवन जी सके — यही 'सब दृष्टियों से मुक्त' होना है।

उत्तर: समाज में व्यक्ति को जाति, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक — हर दृष्टि से स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

प्रश्नावली 10.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस प्रकार के राष्ट्र निर्माण का स्वप्न देखा था?

हल

नेताजी ने एक सर्वांगीण स्वाधीन संपन्न समाज और उस पर एक स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न देखा था।
उस समाज में — (1) व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो, समाज के दबाव से वह मरे नहीं।
(2) जातिभेद का स्थान न हो।
(3) नारी मुक्त होकर पुरुषों की तरह समान अधिकार का उपभोग करे और समाज व राष्ट्र की सेवा में समान रूप से हिस्सा ले।
(4) अर्थ की विषमता न हो।
(5) प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा और उन्नति का समान सुअवसर पाए।
(6) श्रम और कर्म की पूरी मर्यादा हो; आलसी और अकर्मण्य के लिए कोई स्थान न हो।
(7) वह राष्ट्र विश्व-मान्य आदर्श-समाज और आदर्श-राष्ट्र के रूप में गण्य हो।

उत्तर: नेताजी ने सर्वांगीण स्वाधीन-संपन्न, जातिभेद-मुक्त, स्त्री-पुरुष समानता वाले, शिक्षा व अवसर की समानता से युक्त, श्रम-आधारित आदर्श राष्ट्र का स्वप्न देखा था।

प्रश्न 2

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस लक्ष्य की प्राप्ति को अपने जीवन की सार्थकता के रूप में देखा?

हल

नेताजी ने स्पष्ट कहा—"यह स्वप्न मेरे समक्ष नित्य एवं अखंड सत्य है।"
उनके लिए जीवन की सार्थकता इसी स्वप्न — एक स्वाधीन, संपन्न, समतामूलक भारत — को साकार करने में थी।
उन्होंने कहा—"यह स्वप्न मैं तुम्हें उपहारस्वरूप देता हूँ" — अर्थात् इस स्वप्न को युवाओं तक पहुँचाना और उनके माध्यम से इसे पूरा करना ही उनका जीवन-लक्ष्य था।
इस सत्य की प्रतिष्ठा के लिए सब कुछ करना, हर त्याग करना, हर संकट सहना और प्राण देना भी — यही उन्होंने अपनी जीवन-सार्थकता बताई।

उत्तर: स्वाधीन, समतामूलक और संपन्न भारत के स्वप्न की प्राप्ति को नेताजी ने अपने जीवन की सार्थकता माना।

प्रश्न 3

"आलसी तथा अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा" — सुभाषचंद्र बोस ने ऐसा क्यों कहा होगा?

हल

नेताजी का मानना था कि राष्ट्र की प्रगति केवल परिश्रम और कर्म से ही होती है।
जो व्यक्ति काम नहीं करता, वह समाज पर बोझ है और राष्ट्र के संसाधनों का उपभोग तो करता है पर योगदान नहीं

देता।

उन्होंने श्रम और कर्म की मर्यादा पर विशेष बल दिया — जिस समाज में श्रम का सम्मान होगा, वही आगे बढ़ेगा। इसलिए उन्होंने कहा होगा कि आलस और अकर्मण्यता को समाज में स्थान देना पूरे राष्ट्र को कमजोर करना है।

उत्तर: क्योंकि राष्ट्र की प्रगति परिश्रम और कर्म पर निर्भर है; आलसी व्यक्ति समाज पर बोझ बनता है और राष्ट्र की श्रम-शक्ति को कमजोर करता है।

प्रश्न 4

नेताजी सुभाषचंद्र बोस के लक्ष्यों या ध्येय को पूरा करने के लिए आज की युवा पीढ़ी क्या-क्या कर सकती है?

हल

नेताजी के स्वप्न को पूरा करने के लिए आज की युवा पीढ़ी निम्नलिखित कार्य कर सकती है—

1. शिक्षा प्राप्त करना और दूसरों को भी शिक्षित करना, विशेषकर वंचित वर्गों को।
2. जातिभेद, धर्मभेद और लिंग-भेद से ऊपर उठकर सभी को समान मानना।
3. महिलाओं को समान अधिकार और अवसर देने के लिए आवाज उठाना।
4. परिश्रम और ईमानदारी से अपने क्षेत्र में काम करना — चाहे वह विज्ञान हो, कला हो, कृषि हो या व्यवसाय।
5. भ्रष्टाचार का विरोध करना और स्वच्छ समाज बनाने में भागीदार बनना।
6. देश की प्रगति में अपना योगदान देना और राष्ट्र को विश्व में गौरवान्वित करना।

उत्तर: आज की युवा पीढ़ी शिक्षा, समता, नारी-सशक्तीकरण, परिश्रम, ईमानदारी और राष्ट्र-सेवा के माध्यम से नेताजी के स्वप्न को साकार कर सकती है।

प्रश्नावली 10.5 — अनुमान और कल्पना से

प्रश्न 1

"उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो" — सुभाषचंद्र बोस ने किन-किन दृष्टियों से मुक्ति की बात की होगी?

हल

सुभाषचंद्र बोस ने पाठ में स्वयं कई दृष्टियों से मुक्ति की बात कही है, जिनसे अनुमान लगाया जा सकता है—

1. राजनीतिक मुक्ति — अंग्रेजी शासन और हर विजातीय प्रभाव से स्वतंत्रता।
2. सामाजिक मुक्ति — जाति-भेद, छुआछूत और सामाजिक भेदभाव से आजादी।
3. आर्थिक मुक्ति — गरीबी और आर्थिक विषमता से छुटकारा।
4. लैंगिक मुक्ति — नारी को पुरुष के समान अधिकार और अवसर मिलना।
5. शैक्षणिक मुक्ति — अशिक्षा के अंधेरे से मुक्ति, सभी को शिक्षा का समान अवसर।
6. मानसिक मुक्ति — भय, अंधविश्वास और दासता की मानसिकता से स्वतंत्रता।

उत्तर: राजनीतिक, सामाजिक (जातिभेद), आर्थिक (विषमता), लैंगिक (नारी-पुरुष असमानता), शैक्षणिक और मानसिक दृष्टियों से मुक्ति की बात की होगी।

प्रश्न 2

"उस समाज में नारी मुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र के पुरुषों की तरह समान अधिकार का उपभोग करे" — सुभाषचंद्र बोस को अपने भाषण में नारी के लिए समान अधिकारों की बात क्यों कहनी पड़ी?

हल

सन् 1929 में भारत में नारियों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी।
उन्हें शिक्षा, संपत्ति, मताधिकार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी का अधिकार नहीं था।
पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह और सती-प्रथा जैसी कुप्रथाएँ समाज में व्याप्त थीं।
नेताजी जानते थे कि जब तक देश की आधी आबादी (नारी) उन्नति नहीं करेगी, देश आगे नहीं बढ़ सकता।
वे चाहते थे कि नारियाँ भी स्वतंत्रता संग्राम में, समाज-सेवा में और राष्ट्र-निर्माण में पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलें।
इसीलिए उन्होंने नारी के लिए समान अधिकारों की माँग अपने भाषण में की।

उत्तर: सन् 1929 में नारियों को समान अधिकार नहीं थे; उनकी स्थिति दयनीय थी। नेताजी को लगा कि बिना नारी-उन्नति के राष्ट्र का विकास संभव नहीं, इसलिए उन्होंने यह बात कही।

प्रश्न 3

आपके विचार से हमारे समाज में और कौन-कौन से लोग हैं जिन्हें विशेष अधिकार दिए जाने की आवश्यकता है?

हल

हमारे समाज में अनेक वर्गों को विशेष अधिकार और सहायता की आवश्यकता है—

1. दिव्यांगजन — शारीरिक या मानसिक अक्षमता के कारण इन्हें शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक सुविधाओं में

विशेष सहायता चाहिए।

2. आदिवासी समुदाय — इन्हें भूमि-अधिकार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में विशेष ध्यान की जरूरत है।

3. बेसहारा बच्चे और वृद्ध — इन्हें आश्रय, पोषण और सुरक्षा की विशेष जरूरत होती है।

4. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति — सदियों के भेदभाव की भरपाई के लिए इन्हें विशेष अवसर आवश्यक हैं।

उत्तर: दिव्यांगजन, आदिवासी, बेसहारा बच्चे-वृद्ध और वंचित समुदायों को शिक्षा, स्वास्थ्य और अवसर में विशेष अधिकारों की आवश्यकता है।

प्रश्न 4

सुभाषचंद्र बोस देश के समस्त युवा वर्ग को संबोधित करते हुए कहते हैं — "हे मेरे तरुण भाइयो!" उनका संबोधन केवल 'भाइयो' शब्द तक ही क्यों सीमित रहा होगा?

हल

सन् 1929 में सार्वजनिक जीवन और भाषणों में पुरुष-प्रधान संबोधन की परंपरा थी।

उस काल में युवा महिलाओं की भागीदारी इस प्रकार के युवक-सम्मेलनों में बहुत कम थी।

परंतु यह भी ध्यान देने योग्य है कि स्वयं नेताजी ने इसी भाषण में नारी की मुक्ति और समान अधिकार की बात कही है — जो यह दर्शाता है कि वे नारी को भूलते नहीं थे।

संभवतः उन्होंने 'भाइयो' का प्रयोग तत्कालीन परंपरागत भाषा-शैली के कारण किया होगा, या उस सभा में उपस्थित श्रोताओं को देखते हुए।

आज के समय में हम 'भाइयो और बहनो' या 'युवाओ' कहना अधिक उचित मानते हैं।

उत्तर: तत्कालीन परंपरागत भाषा-शैली और उस सभा की परिस्थिति के कारण, हालाँकि नेताजी नारी की समानता के प्रबल समर्थक थे।

प्रश्न 5

"यह स्वप्न मैं तुम्हें उपहारस्वरूप देता हूँ — स्वीकार करो।" — सुभाषचंद्र बोस के इस आह्वान पर श्रोताओं (युवा वर्ग) की क्या प्रतिक्रिया रही होगी?

हल

नेताजी का यह आह्वान युवाओं के लिए अत्यंत प्रेरणादायी रहा होगा।

इस भाषण को सुनकर युवाओं के मन में देश-प्रेम और बलिदान की भावना जागी होगी।

अनेक युवाओं ने तालियाँ बजाकर और 'जय हिंद' के नारे लगाकर इस स्वप्न को स्वीकार किया होगा।

कुछ युवा इसी भाषण से प्रेरित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हुए होंगे।

नेताजी का यह स्वप्न — असीम शक्ति और अपार आनंद देने वाला — उन युवाओं को अपने कष्टपूर्ण जीवन में भी उत्साहित करता रहा होगा।

उत्तर: युवा वर्ग ने उत्साह और देश-प्रेम की भावना से इस स्वप्न को स्वीकार किया होगा और अनेक युवा स्वतंत्रता आंदोलन में और अधिक सक्रिय हुए होंगे।

प्रश्नावली 10.6 — शीर्षक

प्रश्न 1

आपने नेताजी सुभाषचंद्र बोस के भाषण का एक अंश पढ़ा है, इसे 'तरुण के स्वप्न' शीर्षक दिया गया है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि यह शीर्षक क्यों दिया गया होगा?

हल

यह शीर्षक 'तरुण के स्वप्न' इसलिए दिया गया होगा क्योंकि—

1. यह भाषण नेताजी ने युवा वर्ग (तरुण) को संबोधित करते हुए दिया था।
2. भाषण में उन्होंने अपने स्वप्न — एक स्वाधीन, संपन्न, समतामूलक राष्ट्र — को युवाओं को उपहारस्वरूप सौंपा।
3. वे चाहते थे कि यह स्वप्न युवाओं के मन में जीवित रहे और वे उसे साकार करें।
4. 'तरुण' शब्द ऊर्जा, उत्साह और परिवर्तन का प्रतीक है; इस शीर्षक से संदेश मिलता है कि देश का भविष्य युवाओं के हाथ में है।

उत्तर: यह शीर्षक इसलिए दिया गया क्योंकि भाषण का संबोधन और स्वप्न दोनों युवाओं (तरुणों) के लिए थे — नेताजी ने अपना स्वप्न तरुणों को सौंपा।

प्रश्न 2

यदि आपको भाषण के इस अंश को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? यह भी लिखिए।

हल

भाषण के इस अंश को 'आदर्श राष्ट्र का सपना' शीर्षक दिया जा सकता है।

यह नाम इसलिए उचित है क्योंकि पूरे भाषण में नेताजी एक ऐसे आदर्श राष्ट्र का वर्णन करते हैं जो स्वाधीन, संपन्न, समतामूलक और विश्व-मान्य हो।

दूसरा विकल्प हो सकता है — 'नया भारत' या 'स्वाधीन संपन्न भारत' — क्योंकि नेताजी एक नए भारत की संकल्पना प्रस्तुत करते हैं।

उत्तर: 'आदर्श राष्ट्र का सपना' — क्योंकि पूरा भाषण एक आदर्श, समतामूलक और स्वाधीन राष्ट्र की संकल्पना पर केंद्रित है।

प्रश्न 3

सुभाषचंद्र बोस ने अपने समय की स्थितियों या समस्याओं को अपने संबोधन में स्थान दिया है। यदि आपको अपनी कक्षा को संबोधित करने का अवसर मिले तो आप किन-किन विषयों को अपने उद्बोधन में सम्मिलित करेंगे और उसका क्या शीर्षक रखेंगे?

हल

यदि मुझे कक्षा को संबोधित करने का अवसर मिले तो मैं निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित करूँगा/करूँगी—

1. पर्यावरण संरक्षण — आज की सबसे बड़ी समस्या।

2. डिजिटल साक्षरता — तकनीक का सही उपयोग।

3. मानसिक स्वास्थ्य — परीक्षा के दबाव से कैसे निपटें।

4. आत्मनिर्भरता — स्वयं सोचने और निर्णय लेने की शक्ति।

शीर्षक: 'हमारी जिम्मेदारी, हमारा भविष्य' — क्योंकि आज के युवाओं पर ही कल के भारत की जिम्मेदारी है।

उत्तर: पर्यावरण, डिजिटल साक्षरता, मानसिक स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता जैसे विषय सम्मिलित करूँगा/करूँगी; शीर्षक — 'हमारी जिम्मेदारी, हमारा भविष्य'।

प्रश्नावली 10.7 — भाषा की बात

प्रश्न 1

सुभाषचंद्र बोस ने अपने भाषण में संख्या, संगठन या भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों के साथ उनकी विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्दों का प्रयोग किया है। उनके भाषण से विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्द ढूँढकर दिए गए शब्द समूह को पूरा कीजिए— (i) अखंड _____ सत्य (ii) _____ जीवन (iii) _____ समाज (iv) _____ शक्ति (v) _____ राष्ट्र (vi) _____ आनंद

हल

भाषण में प्रयुक्त विशेषणों को ढूँढकर रिक्त स्थान भरें—

(i) अखंड → 'नित्य एवं अखंड सत्य' — उत्तर: नित्य (अखंड के साथ जोड़ा गया विशेषण)

पाठ में: "यह स्वप्न मेरे समक्ष नित्य एवं अखंड सत्य है" — अतः: नित्य एवं अखंड सत्य

(ii) जीवन — पाठ में 'क्षुद्र जीवन' — उत्तर: क्षुद्र जीवन

पाठ में: "जो मेरे क्षुद्र जीवन को भी सार्थक बनाता है"

(iii) समाज — पाठ में 'स्वाधीन संपन्न समाज' — उत्तर: स्वाधीन संपन्न समाज

(iv) शक्ति — पाठ में 'असीम शक्ति' — उत्तर: असीम शक्ति

पाठ में: "जो हमें असीम शक्ति और अपार आनंद देता है"

(v) राष्ट्र — पाठ में 'स्वाधीन राष्ट्र' — उत्तर: स्वाधीन राष्ट्र

(vi) आनंद — पाठ में 'अपार आनंद' — उत्तर: अपार आनंद

उत्तर: (i) नित्य एवं अखंड सत्य (ii) क्षुद्र जीवन (iii) स्वाधीन संपन्न समाज (iv) असीम शक्ति (v) स्वाधीन राष्ट्र (vi) अपार आनंद

प्रश्नावली 10.8 — विपरीतार्थक शब्द और उनके प्रयोग

प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में शब्द दिए गए हैं। रेखाएँ खींचकर विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़े बनाइए— स्तंभ 1: स्वीकार, सार्थक, विषमता, क्षुद्र, संपन्न, अकर्मण्य, मरण स्तंभ 2: कर्मण्य / कर्मठ, विपन्न, अस्वीकार, जीवन, निरर्थक, समानता, विशाल / वृहत / विराट / महान

हल

स्वीकार ↔ अस्वीकार
सार्थक ↔ निरर्थक
विषमता ↔ समानता
क्षुद्र ↔ विशाल / वृहत / विराट / महान (पाठ में 'क्षुद्र जीवन' के विपरीत 'महान' जीवन)
संपन्न ↔ विपन्न
अकर्मण्य ↔ कर्मण्य / कर्मठ
मरण ↔ जीवन

उत्तर: स्वीकार ↔ अस्वीकार; सार्थक ↔ निरर्थक; विषमता ↔ समानता; क्षुद्र ↔ विशाल/वृहत/विराट/महान; संपन्न ↔ विपन्न; अकर्मण्य ↔ कर्मण्य/कर्मठ; मरण ↔ जीवन

प्रश्नावली 10.9 — मिलान कीजिए — स्वतंत्रता सेनानी

प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 में स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित कुछ तथ्य दिए गए हैं और स्तंभ 2 में स्वतंत्रता सेनानियों के नाम दिए गए हैं। तथ्यों का स्वतंत्रता सेनानियों के नाम से रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए। स्तंभ 1: 1. 8 अप्रैल, 1929 को 'सेंट्रल असेंबली' में बम फेंकने वाले क्रांतिकारी, 'शहीद-ए-आजम' के नाम से जाने जाते हैं। 2. 'स्वराज पार्टी' के संस्थापकों में से एक, सुभाषचंद्र बोस के राजनीतिक गुरु कहे जाते हैं। 3. जेल में क्रांतिकारियों के साथ राजबंदियों के समान व्यवहार न होने के कारण क्रांतिकारियों ने 13 जुलाई 1929 से भूख हड़ताल शुरू कर दी। अनशन के तिरसठवें दिन जेल में इनका देहांत हो गया। 4. इनके जन्मदिवस पर 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' मनाया जाता है। 5. नर्मदा नदी के तट पर इनकी एक विशाल प्रतिमा स्थापित है, जिसे 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' कहा जाता है। 6. 1921 में असहयोग आंदोलन में गिरफ्तार होने पर न्यायाधीश ने इनसे पिता का नाम पूछा तो इन्होंने कहा — "मेरा नाम आजाद है, पिता का नाम स्वतंत्रता और पता कारावास है।" स्तंभ 2: 1. सरदार वल्लभभाई पटेल 2. महात्मा गांधी 3. चंद्रशेखर आजाद 4. चित्तरंजन दास 5. जतिन दास 6. भगत सिंह

हल

तथ्य 1 — 8 अप्रैल, 1929 को सेंट्रल असेंबली में बम फेंका, 'शहीद-ए-आजम' कहलाते हैं → भगत सिंह
तथ्य 2 — 'स्वराज पार्टी' के संस्थापक, सुभाषचंद्र बोस के राजनीतिक गुरु → चित्तरंजन दास
तथ्य 3 — भूख हड़ताल के तिरसठवें दिन जेल में देहांत → जतिन दास
तथ्य 4 — इनके जन्मदिवस पर 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' → महात्मा गांधी (2 अक्तूबर)
तथ्य 5 — नर्मदा नदी के तट पर 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' → सरदार वल्लभभाई पटेल
तथ्य 6 — 'मेरा नाम आजाद है, पिता का नाम स्वतंत्रता...' → चंद्रशेखर आजाद

उत्तर: 1 → भगत सिंह; 2 → चित्तरंजन दास; 3 → जतिन दास; 4 → महात्मा गांधी; 5 → सरदार वल्लभभाई पटेल; 6 → चंद्रशेखर आजाद

प्रश्न 2

इनमें से एक स्वतंत्रता सेनानी का नाम 'तरुण के स्वप्न' पाठ में भी आया है। उसे पहचानकर लिखिए।

हल

'तरुण के स्वप्न' पाठ में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने देशबंधु चित्तरंजन दास का उल्लेख किया है।
पाठ की पंक्ति है — "हमारे नेता स्वर्गीय देशबंधु चित्तरंजन दास ने भी एक स्वप्न देखा था।"
सुभाषचंद्र बोस ने चित्तरंजन दास को अपना राजनीतिक गुरु माना और उन्हीं के स्वप्न को आगे बढ़ाने की बात इस भाषण में की है।

उत्तर: चित्तरंजन दास — पाठ में नेताजी ने कहा: "हमारे नेता स्वर्गीय देशबंधु चित्तरंजन दास ने भी एक स्वप्न देखा था।"

प्रश्नावली 10.10 — स्त्री सशक्तीकरण

प्रश्न 1

सुभाषचंद्र बोस ने 'आजाद हिंद फौज' का नेतृत्व किया था। उसमें एक टुकड़ी स्त्रियों की भी थी। उस टुकड़ी का नाम पता लगाकर लिखिए। उस टुकड़ी की भूमिका क्या थी? यह भी बताइए।

हल

आजाद हिंद फौज में स्त्रियों की टुकड़ी का नाम था — 'रानी झाँसी रेजिमेंट' (Rani of Jhansi Regiment)।
इसका गठन 1943 में सुभाषचंद्र बोस के आदेश पर सिंगापुर में किया गया था।
इस रेजिमेंट की कमान डॉ. लक्ष्मी सहगल (जो उस समय कैप्टन लक्ष्मी के नाम से जानी जाती थीं) के हाथ में थी।
इस टुकड़ी की भूमिका — घायल सैनिकों की सेवा और चिकित्सा (नर्सिंग), संचार कार्य, और जरूरत पड़ने पर सशस्त्र युद्ध में भागीदारी।
यह भारतीय इतिहास में पहली महिला सैन्य इकाई थी जिसने सशस्त्र स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया।

उत्तर: टुकड़ी का नाम: रानी झाँसी रेजिमेंट। भूमिका: घायल सैनिकों की सेवा, संचार कार्य, और आवश्यकता पड़ने पर सशस्त्र युद्ध में भागीदारी। नेतृत्व: डॉ. लक्ष्मी सहगल।

प्रश्नावली 10.11 — नारों का मिलान — स्वतंत्रता सेनानी

प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 में कुछ नारे दिए गए हैं। नारों के सामने लिखिए कि यह किसके द्वारा दिया गया? 1. स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। 2. करो या मरो 3. मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूँगा 4. इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद 5. पूर्ण स्वराज

हल

1. 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।' — यह नारा बाल गंगाधर तिलक ने दिया था।
2. 'करो या मरो' — यह नारा महात्मा गांधी ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में दिया था।
3. 'मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूँगा' — यह नारा / कथन चंद्रशेखर आजाद का था।
4. 'इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद' — यह नारा भगत सिंह और उनके साथियों ने दिया था।
5. 'पूर्ण स्वराज' — यह नारा जवाहरलाल नेहरू ने 1929 के कांग्रेस लाहौर अधिवेशन में दिया था।

उत्तर: 1. बाल गंगाधर तिलक; 2. महात्मा गांधी; 3. चंद्रशेखर आजाद; 4. भगत सिंह; 5. जवाहरलाल नेहरू